हिंदी भाषा के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

शोधार्थी

काजल गुप्ता

लखनऊ विश्वविद्यालय

लखनऊ, उत्तर प्रदेश

शोध-सार :

हिंदी भाषा के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका एक महत्वपूर्ण संदर्भ है । प्रस्तुत शोध पत्र में हमें यह समझने का अवसर मिलता है कि कैसे जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के विकास में योगदान दिया है।

आज हिन्दी विश्व में बोली तथा समझी जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा बन गई है, इसमे जनसंचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं। जनसंचार माध्यमों में प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों ने हिंदी का विकास एक ऐसी भाषा रूप में किया है जिसने भाषा समृद्ध समाज के साथ भाषा वंचित समाज को वैश्विक स्तर पर जोड़ा है । जनसंचार माध्यमों द्वारा हिंदी आज सहज ज्ञान विज्ञान व वैश्विक सन्दर्भों से जुड़कर विश्व जनमत का निर्माण कर रही है तो वहीं दूसरी ओर आम जन के मनोरंजन, कला, शिक्षा रोज़गार की भाषा के रूप में भी उभर रही है! अपनी इसी व्यापकता के कारण हिंदी आज विश्व पटल पर बड़ी तेजी से विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

जनसंचार माध्यम, जैसे समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और अब इंटरनेट, हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। ये माध्यम न केवल सूचना और मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी, भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है, और जनसंचार माध्यमों ने इसके विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के प्रसार में मदद की, हिंदी भाषा के विकास को बढ़ावा दिया, हिंदी भाषा के साहित्य को प्रोत्साहित किया, और हिंदी भाषा के शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा दिया ।

भूमिका:

एक अच्छी भाषा वही है जो गतिशील हो । गतिशीलता ही भाषा को जीवंत बनाती है। हिन्दी सदैव से ही एक गतिशील भाषा रही है, अपने समय समाज के साथ समन्वय करती

हुई हिन्दी विश्वभर में आज जन संपर्क की भाषा के रूप मे प्रतिष्ठित हो चुकी है । भूमंडलीकरण एवं सूचना समाज के इस युग में निरंतर जनसंचार माध्यमों का विकास हुआ है नये नये उपकरणों ने जनसंचार द्वारा विश्व को गांव के रूप मे समायोजित कर रही है । जनसंचार का पारंपरिक माध्यम समाचार-पत्र, पत्रिकाएं, साहित्य, नाटक , चित्र,हो या नए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रेडियो, टेलीविजन , इन्टरनेट के जरिए सोशल मीडिया ब्लोगिंग, वेब पेज, विभिन्न वेब साइट के माध्यम से जनसंचार का कार्य बड़ी तीव्र गति से बढ़ रही है। ऐसे में एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस होती है जो जनसंचार माध्यमों की भाषा बनकर विश्व जनमत का निर्माण कर सके ।

हिन्दी की ग्राह्य क्षमता उसे जनसंचार की भाषा बना रही है । हिंदी संचार माध्यमों से और जनसंचार माध्यम हिन्दी से जुड़कर दोनों ही निरन्तर समृद्ध हो रही है। इस सन्दर्भ में डॉ.मिन्तु अपने लेख में लिखते है " इस रूप विस्तार के मूल में यह तथ्य निहित है कि गतिशीलता हिन्दी का बुनियादी चरित्र है। इन्टरनेट एक ऐसा माध्यम है जिसने दुनिया को सचमुच मनुष्य को मुट्ठी में कर दिया है। सूचना समाचार और संवाद प्रेषण के लिए इन्होने हिन्दी को विकल्प के रूप में विकसित करके संचार तकनीक को समृद्ध किया ही है, हिन्दी को भी समृद्धतर बनाया है।"

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी साहित्य को भी बढ़ावा दिया है। हिंदी के प्रसिद्ध लेखकों और कवियों की रचनाएँ अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं, जिससे हिंदी साहित्य को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के शिक्षा और संस्कृति को भी बढ़ावा दिया है। टेलीविज़न और रेडियो पर हिंदी भाषा में शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिससे हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

बीज शब्द :

हिंदी भाषा, जनसंचार माध्यम, विकास, प्रसार, साहित्य, शिक्षा, संस्कृति आदि ।

उद्देश्य :

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य हैं:

1.जनसंचार माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करना: यह समझना कि कैसे जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के विकास में योगदान दिया है।

2.हिंदी भाषा के विकास में जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना: यह समझना कि कैसे जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के विकास पर प्रभाव डाला है।

3.जनसंचार माध्यमों और हिंदी भाषा के विकास के बीच संबंधों को समझना: यह समझना कि कैसे जनसंचार माध्यमों और हिंदी भाषा के विकास के बीच संबंध हैं।

शोध-विस्तार:

जनसंचार के सशक्त माध्यमों में मुद्रित या इलेक्ट्रॉनिक पत्र पत्रिकाएं है। जिसे वेब पत्रिका भी कहा जाता है ।समाचार पत्रिका हो या हिन्दी वेब पत्रकारिता जनसंचार माध्यमों में अपना अलग स्थान बना चुकी है। आज विश्व मीडिया की नजर हिन्दी पत्रकारिता पर है। हिंदी पत्रकारिता में हिंदी का विकास एक नए रूप में हुआ है। आज यदि हम हिन्दी पत्रकारिता के आरम्भिक दौर पर नजर डालें तो संचार भाषा के रूप मे हिन्दी के विकास का सही निष्कर्ष निकाल सकते है1" कल वेला 11 घंटे के वक़्त निमतला घाट में मरा आदमी जलाने के वक़्त आपसे पानी पिया और दाहे भी खाने को माँगा हमारा आदमी देख आया इस्का बेवरा समेत कल प्रकाश होवेगा ।"(बंगदूत की भाषा) हम कह सकते हैं आज के समाचारों में प्रयोग धर्मिता बढ़ी है नए शब्दों का इजाफा हुआ है । नए नए वाक्य रचे जा रहे हैं जैसे आतिशी ने संभाली दिल्ली की कमान, आस्था के साथ खिलवाड़, कश्मीर आस को विश्वास चाहिए, बेटियों से है मुस्कान बेटियों से ही है ये जहान। सूर्य प्रसाद दीक्षित संचार भाषा के इस रूप टिप्पणी करते हुए लिखते हैं "यह संचार भाषा व्याकरणिक शुद्धता से ज़्यादा सम्प्रेषणीयता की टोह में रहती है। त्वरित सम्प्रेषण के लिए यह प्रयत्न लाघव और संक्षेपण की नीति अपनाती है ।"2 इस तरह जनसंचार माध्यमों द्वारा हिंदी मुहावरेदार भाषा के रूप में विश्व में लोकप्रिय हो रही है। इसी प्रकार इन्टरनेट और वेबसाइट की सुविधा ने पत्र पत्रकारिता के ई-संस्करण तथा पूर्णतः ऑनलाइन पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर सर्वथा नयी दुनिया के दरवाजे खोल दिए हैं।" वेब पत्रकारिता को हम इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता ,साइबर पत्रकारिता आदि नाम से जानते हैं जैसा कि वेब पत्रकारिता नाम से स्पष्ट है यह कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है जिसकी पहुंच किसी एक पाठक, एक गांव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं बल्कि समूचे विश्व तक है जो डिजिटल तरंगो के माध्यम से प्रदर्शित है ।वेब मीडिया सर्वव्यापकता को भी चरितार्थ करती है जिसमें खबरें दिन के चौबीस घंटे और हफ्ते के सातों दिन उपलब्ध रहती है।"3

इंटरनेट उपभोक्ताओं की तेजी से बढ़ रही संख्या हिंदी के विकास की गति और दिशा सुनिश्चित कर रही है । डिजिटल दुनिया में हिंदी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना तेजी से बढ़ रही है भारत में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी का उपयोग करता है।

इंटरनेट एवं सोशल साइट्स, वेब पोर्टल आदि हिंदी अनुवाद, हिंदी शिक्षण प्रचार ,हिंदी ब्लॉगिंग को एक प्रभावशाली मंच प्रदान कर रही है जिसके माध्यम से राजनीति, सांस्कृतिक, साहित्यिक, व्यक्तिगत, वाणिज्य, अनुसंधान और शिक्षा आदि के क्षेत्र की जानकारी हिंदी मे उपलब्ध कराई जा रही है । विभिन्न प्रकार की हिंदी सॉफ्टवेयर टूल्स का निर्माण एवं देवनागरी लिपि की टंकण व्यवस्था हिंदी के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दे रही है। इसमें एक सॉफ्टवेयर है मंत्र राजभाषा जो अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद के लिए सहायक है। इसके अलावा हिंदी सीखने का ऑनलाइन पाठ्यक्रम है लीला जिसे अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की सहायता से सीख सकते हैं । कंप्यूटर में नागरी लिपि के प्रयोग का प्रथम प्रयास इलेक्ट्रॉनिक कॉरपोरेशन आफ इंडिया हैदराबाद द्वारा किया गया। वर्तमान समय में कंप्यूटर निर्माता द्वारा 40 से अधिक हिंदी के सॉफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध करा दिए गए हैं।

जनसंचार माध्यमों में हिंदी की बढ़ती उपयोगिता ने हिंदी को एक ओर वैश्विक भाषा के रूप में विकसित किया है तो दूसरी ओर उसके मूल स्वरूप में परिवर्तन भी हो रहा है। संचारी भाषा के रूप में विकसित हिंदी के स्वरूप को हम निम्न बिंदुओं द्वारा सरलता से समझ सकते हैं:-

हिंदी -अंग्रेजी मिश्रित संकर भाषा: हिंदी तथा अंग्रेजी मिश्रित कई शब्द आजकल हिंदी में धड़ल्ले से प्रयुक्त हो रही है जिसे व्यंग रूप में 'हिंग्लिश' भी कहा जाता है । जैसे उसने जस्टिफाई किया, साइन करती है, भारत ने जीती चैंपियंस ट्रॉफी , मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है, डॉक्टर ने बेड रेस्ट के लिए कहा है आदि। इस नई हिंदी के ऊपर टिप्पणी करते हुए डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित ने कहा है कि "इन प्रयोगों से हिंदी की शुद्धता अवश्य प्रभावित हुई है लेकिन सहजता कई गुना बढ़ी हैं "।4 निश्चय ही यह कहा जा सकता है की सहजता किसी भी भाषा का वह गुण है जिसके द्वारा भाषा की संप्रेषण शक्ति बढ़ती है।

तुकांत भाषा: जनसंचार माध्यमों का उद्देश्य यही होता है कि वह एक व्यापक समाज को अपनी ओर आकर्षित कर सके इसके लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जिसके द्वारा इस कार्य को सफलता मिल सके। हिंदी में इधर तुकांतो का प्रयोग काफी बढ़ गया है जिसे हिंदी की आकर्षण शक्ति बढ़ रही है । इसमें जनसंचार माध्यमों की महती भूमिका है।उदाहरणार्थ देख सकते है रिश्ता वही सोच नई,

स्वाद का खजाना कर दे दीवाना, कम खर्च कम कमाई अंकल चिप्स आजमाई आदि।

मुहावरे एवं लोकोक्तियां का प्रयोग: मुहावरे एवं लोकोक्तियां किसी भी भाषा को जीवंत बनाए रखने में सहायक होती है हिंदी भाषा में जनसंचार माध्यमों के द्वारा प्रयुक्त नए मुहावरे एवं लोकोक्तियां का प्रयोग बढ़ा है । चेहरा लाल पीला होता रहा, ढांचा चमरा गई ,फूलों की वर्षा होती रही, योजनाएं ठंडी बस्ते में, मंसूब ढ़ेर हो गए आदि का प्रयोग संचार भाषा में किया जाता है।

शब्द युग्म का प्रयोग : हिंदी जब से संचारी भाषा के रूप में व्यवस्थित हुई है तब से उसमें शब्द युग्म का प्रयोग बढ़ता गया है यह शब्द युग्म भाषा को सरसता प्रदान करती है जैसे रोकथाम, दरबार ,लीपा पोती, आमूल चूल, अनाप-शनाप आदि से निश्चय ही हिंदी भाषा की प्रभावोत्पादकता बढ़ी है।

पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग : जनसंचार माध्यमों में आवश्यकता के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावलियों का भी प्रयोग करना पड़ता है जैसे निलंबन ,मामला लंबित, संगणक प्राथमिकता, वरीयता, अधिग्रहण, अतिक्रमण व नियोजन आदि । हिंदी के पारिभाषिक शब्दों का जनसंचार माध्यम द्वारा प्रचार प्रसार हो रहा है।

दूसरी भाषा को अपने अंदर ग्रहण करने की क्षमता हिंदी भाषा की आरंभिक विशेषता रही है। अपने इसी आत्मसातीकरण की प्रवृत्ति के कारण आज हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में उभर के सामने आ रही हैं इस संबंध में डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी का कहना है "इस शब्दावली को हिंदी ने कुछ तो सीधे तौर पर (तत्सम रूप में) ग्रहण किया है, पर अधिकतर, तद्भव रूप में यह शब्दराशि फारसी और अंग्रेजी से ली है। स्पष्ट है कि हिंदी शब्द संपदा की वृद्धि में इन विदेशी भाषाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। विश्व भर की शब्दावली को आत्मसात कर लेने के कारण ही आज हिंदी का विश्व भाषा रूप निर्मित हुआ है और उत्तरोत्तर होता जा रहा है।"5 इस प्रकार हम कह सकते है कि जनसंचार माध्यमों द्वारा हिंदी की प्रयोगधर्मिता बढ़ी है और हिंदी का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। हिंदी की वैश्विक प्रगति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अभी हाल ही में संयुक्त राष्ट्र द्वारा हिंदी को सूचना संचार की भाषा घोषित कर दिया गया है । अभी तक विश्व की मुख्य पांच भाषाओं अंग्रेज़ी ,फ्रेंच, रूसी, चीनी और स्पेनिश ही संयुक्त राष्ट्र संघ की संचार भाषा के रूप में कार्य करती थी परंतु अब हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ की संचार भाषा का दर्जा पा चुकी है। वैश्विक स्तर पर भी अनेक कामकाज हिंदी में किया जा रहा हैं ।

उपलब्धियां:

हिंदी के विकास में जनसंचार माध्यमों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविज़न, और इंटरनेट जैसे माध्यमों ने हिंदी भाषा को विश्वभर में प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के मानकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविजन कार्यक्रमों में एक मानक हिंदी का प्रयोग किया जाता है, जिससे भाषा को एकरूपता मिली है। इससे विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक ही हिंदी को समझ पा रहे हैं और इसके उपयोग में आसानी हो रही है।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा की शब्दावली को समृद्ध करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नए शब्दों और वाक्यांशों को, खासकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और आधुनिक जीवन से संबंधित, हिंदी में शामिल किया गया है। इससे भाषा को समकालीन विषयों पर चर्चा करने और ज्ञान का प्रसार करने में मदद मिली है।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा को देश के कोने-कोने तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी भाषा दूर-दराज के गांवों और कस्बों तक पहुंची है। इंटरनेट की पहुंच के साथ, हिंदी आज एक वैश्विक भाषा बन गई है, जिसका उपयोग दुनिया भर में किया जा रहा है।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के प्रति लोगों की रुचि को बढ़ाने में भी मदद की है। मनोरंजक कार्यक्रम, जैसे फिल्में, धारावाहिक और संगीत, लोगों को हिंदी भाषा की ओर आकर्षित करते हैं। इससे हिंदी भाषा को सीखने और बोलने में लोगों की रुचि बढ़ी है।

जनसंचार माध्यमों ने हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों को भी प्रसारित किया है। धार्मिक कार्यक्रम, लोकगीत और पारंपरिक नाटक लोगों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखने में मदद करते हैं।

शोध-समाहार:

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि निस्संदेह हिंदी के वैश्विक प्रगति में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण

भूमिका है ।जनसंचार माध्यमों द्वारा हिंदी का विकास एक सम्प्रेषणीय , प्रभावोत्पादक, आकषर्णीय, सरस एवं रोजगार परक भाषा के रूप में हो रहा है अपनी इसी विकासनशील प्रवृत्ति के कारण हिंदी आज विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई है। लेकिन यहां थोड़ा ठहरकर विचार करने की आवश्यकता है कि जन माध्यमों द्वारा हिंदी का प्रयोग जिस रूप में हो रहा है वह क्या सचमुच हिंदी का मूल रूप है? या हिंदी एक अपंग भाषा के रूप में अँग्रेजी के बैशाखी लिए विश्व भाषा बन रही है ।लिखित हो या मौखिक संचार भाषा में प्रयुक्त हिंदी भाषिक प्रदूषण का शिकार हो चुकी है ।उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण, शब्द प्रयोग आदि हड़बड़ी लेखन का शिकार होकर अपनी मूल रूप में नही रही है ऐसे में जरूरत है कि इस भाषी चुनौती का निवारण किया जाए इसके लिए हिंदी ज्ञाताओ एवं संचारी माध्यमों के प्रयोगकर्ता को सजग होकर आ रही भाषिक भूलों में सुधार करना चाहिए जिससे हिंदी अपने मूल रूप में विश्व भाषा बने ना कि अपंग रूप में।

गौरतलब है कि यदि शत- प्रतिशत शुद्धता और साथ ही जोखिम भरे हुए भाषिक प्रयोगों का सिलसिला समानांतर रूप से चलता रहे तो अपनी प्रचुर संचार संवेदना से युक्त हिंदी माध्यम भाषा के रूप में बड़ी तीव्रता से सफलता एवं सार्थकता के शीर्ष पर पहुंच जाएगा।

यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हिंदी भाषा का उपयोग उचित तरीके से किया जाए और इसकी गरिमा को बनाए रखा जाए। जनसंचार माध्यमों को भाषा को सरल बनाने के नाम पर विकृत नहीं करना चाहिए, और क्षेत्रीय बोलियों को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डा. मिन्तु, संचार माध्यम और हिन्दी, आलेख ,शोध मंचन पृ.02

2. प्रो.दीक्षित, सूर्यप्रसाद, जन संचार प्रकृति और परम्परा, द्राईडेंट पब्लिशर्स,प्रथम संस्करण 2011,पृ. 167

3. सुमन, हंसराज, एस. विक्रम : वेब पत्रकारिता पृ. 15

4 . प्रो० दीक्षित, सूर्यप्रसाद, जन संचार छ प्रकृति और परम्परा, ड्राईडेंट। पब्लिशर्स, प्रथम संस्करण 2011 पृ. 159.

5. प्रो. दीक्षित. सूर्यप्रसाद, हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, प्रथम संस्करण 2012 नमन प्रकाशन, पृ. 79